।।श्री गणेशाय नमः।।

कन्या विवाह की अचूक साधना

अनामा प्रकाशन राँची

कन्या विवाह की अचूक साधना

प्रस्तुति

श्री राजवंश तिवारी
आरक्षी अवर निरीक्षक
बिहार पुलिस रेडियो, पटना

अनामा प्रकाशन, राँची

अनामा प्रकाशन, राँची

© सर्वाधिकार सुरक्षित

गुरुमाता श्रीमती कमलामणि उपाध्याय
राजरोशन भवन, अलकापुरी, रातू रोड, राँची
दूरभाष : 280874

मुद्रक ओम प्रिन्टिंग प्रेस
प्रथम संस्करण - 1000 प्रति

दक्षिणा - इच्छानुसार

प्रस्तावना

आज के सामाजिक परिवेश में कन्याओं का विवाह अभिभावकों के लिए एक महत्वपूर्ण समस्या बनी हुई है। अभिभावकों को कहीं तो दहेज आदि के रूप में धनलोलुप लोगों से सामना करना पड़ता है, तो कहीं कन्या के उपयुक्त वर नहीं मिल पाता है, और यदि वर मिलता भी है तो उसकी माँगों के सामने अभिभावकगण विवश हो जाते हैं और सम्बन्ध बनते-बनते बिगड़ जाता है। उपयुक्त वर एवं घर की तलाश में वर्षों बीत जाते हैं और कन्या की आयु विवाह की सीमा पार कर जाती है। यदि विवाह हो भी जाता है तो कन्या का जीवन सुखमय नहीं रह पाता है और वह काफी दुःखद परिणाम भोगने के लिए विवश हो जाती है। अपार यंत्रणा का सामना करती है जिसके फलस्वरूप आत्मदाह तथा आत्महत्या के लिए भी उसे उतारू हो जाना पड़ता है। समाज की इस विषमता को देखते हुए यह पुस्तिका जन कल्याण हेतु इच्छुक लोगों को समर्पित है। पुस्तक में लिखी हुई साधना अचूक एवं अमोघ है जिसका अनुगमन कर उपयुक्त वर से विवाह, दैवी कृपा से संभव हो जाता है। सैकड़ों कन्याओं का विवाह इस साधना से सम्भव हो चुका है। फलस्वरूप लेखक को लोगों की श्रद्धा और सम्मान भरपूर मिल रहा है।

निवेदक : **भैरव भैरवानन्दनाथ**
शिवाशिव समूह, पटना।

साधना-विधि

कन्या या उसकी माँ या कोई भी अभिभावक स्नान करने के पश्चात गणेश-प्रतिमा स्थापित करें तथा चमेली या तिल का तेल उस प्रतिमा पर चुपेड़ दें, फिर सिन्दूर से पूरी प्रतिमा लेप दें। पंचोपचार से गणपति का पूजन करें। पंचोपचार के द्रव्य हैं - आचमन, चन्दन, पुष्प, धूप, घी का दीपक और गुड़ का नैवेद्य। **'श्री गणेशाय नमः'** बोलकर अर्पित कर दें फिर शिवलिङ्ग पर पंचद्रव्य अर्पित करें (पंचद्रव्य - गाय का दूध, दही, मधु, घी, हल्दी) तथा शिव लिंग को गंगाजल या जल से स्नान करायें। ग्यारह बेलपत्र तथा फूल थोड़ा प्रसाद शिवलिंग पर चढ़ावें तथा **'ॐ नमः शिवाय'** की एक माला जप करें। फिर निम्नांकित संदर्भ का पाठ करें :

दोहा : लगे संवारन सकल सुर ।
वाहन विविध विमान।।
होहिं सगुन मंगल सुभद।
करहिं अपछरा गान।।

चौपाई सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा।
जटा मुकुट अहि मौरू सँवारा।।
कुंडल कंकन पहिरे व्याला।
तन विभूति पट केहरि छाला।
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा।
नयन तीनि उपवीत भुजंगा।।
गरल कंठ उर नर सिर माला।

असिव वेष सिव धाम कृपाला।।
कर त्रिसूल अरू डमरू विराजा।
चले बसह चढ़ि बाजहि बाजा।।
देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं।
वर लायक दुलहिनि जग नाहीं।
विष्नु विरंचि आदि सुरब्राता।
चढ़ि-चढ़ि वाहन चले बराता।।
सुर समाज सब भाँति अनूपा।
नहिं बरात दूलह अनुरूपा।।

दोहा बिष्नु कहा अस बिहँसि तब
बोलि सकल दिसिराज।

बिलग बिलग होई चलहु सब
निज निज सहित समाज।।

चौपाई वर अनुहारि बरात न भाई।
हंसी करैहहु पर पुर जाई।।
विष्णु वचन सुनी सुर मुसुकाने।
निज निज सेन सहित बिलगाने।।
मनहीं मन महेसु मुसुकाहीं।
हरि के बिंग्य बचन नहिं जाहीं।।
अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे।
भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे।।
सिव अनुसासन सुनि सब आये।

प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए।।
नाना बाहन नाना वेषा।
बिहसे सिव समाज निज देखा।।
कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू।
बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू।।
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना।
रिष्टपुष्ट कोउ अति तन खीना।।

छन्द तनखीन कोउ अतिपीन पावन कोउ अपावन गति धरें।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें।।
खर स्वान सुअर सृकाल मुख गनवेष अगनित को गनै।
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै।।

हरिहि देखि अति भए सुखारी।।
सिव समाज जब देखन लागे।
बिडरि चले बाहन सब भागे।।
धरि धीरजु तेहँ रहे सयाने।
बालक सब लै जीव पराने।।
गएँ भवन पूछहिं पितु माता।
कहहिं बचन भय कंपित गाता।।
कहिअ काह कहि जाइ न बाता।
जमकर धार किधौं बरिआता।।
बरू बौराह बसहँ असवारा।
ब्याल कपाल बिभूषन छारा।।

सो0 नाचहिं गावाहिं गीत परम तरंगी भूत सब।
देखत अति बिपरीत बोलहिं बचन बिचित्र बिधि।।

चौपाई जस दूलहु तसि बनी बराता।
कौतुक बिबिध होहिं मग जाता।।
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना।
अति बिचित्र नहिं जाई बखाना।।
सैल-सकल जहं लगि जग माहीं।
लघु बिसाल नहिं बरनि सिराहीं।।
बन सागर सब नदी तलावा।
हिम गिरि सब कहुं नेवत पठावा।।
काम रूप सुंदर तन धारी।

छंद तनछार ब्याज कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा।
संग भूतप्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा।।
जो जिअत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही।
देखिहि सो उमा बिबाहु घर घर बात असि लरिकन्ह कहीं।।

दोहा
समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं।
बाल बुझाए बिबिध बिधि निडर होहु डरू नाहिं।।

चौपाई लै अगवान बरातहिं आए।
दिए सबहि जनवास सुहाए।।
मैनाँ सुभ आरती संवारी।

सहित समाज सहित बर नारी।।
गए सकल तुहिनाचल गेहा।
गावहिं मंगल सहित सनेहा।।
प्रथमहिं गिरि बहु गृह संवराए।
जथा जोगु तंह तंह सब छाये।।
पुर सोभा अवलोकि सुहाई।
लागइ लघु बिरंचि निपुनाई।।

छंद लघु लाग बिधि की निपुनता
अवलोकि पुर सोभा सही।
बन बाग कूप तड़ाग सरिता
सुभग सब सक को कहीं।।

संग सुमंगल गावहिं नारी।।
कंचन थार सोह वर पानी।
परिछन चली हरहि हरषानी।।
बिकट वेष रूद्रहि जब देखा।
अबलन्ह उर भय भयउ बिसेषा।।
भागि भवन पैठी अति त्रासा।
गए महेसु जहां जनवासा।।
मैना हृदयं भयउ दुखु भारी।
लिन्हीं बोलि गिरीस कुमारी।।
अधिक सनेह गोद बैठारी।
स्याम सरोज नयन भरे बारी।।

मंगल बिपुल तोरन पताका
केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरूष सुंदर चतुर
छवि देखि मुनि मन मोहहीं।

दोहा - जगदंबा जंह अवतरी, सोपुर बरनि कि जाई।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख, नित नूतन अधिकाई।।

चौपाई - नगर निकट बरात सुनि आई।
पुर खरभरू सोभा अधिकाई।।
करि बनाव सजि वाहन नाना।
चले लेन सादर अगवाना।।
हियं हरषे सुर सेन बिहारी।

जेहिं बिधि तुम्हहि रूपु अस दीन्हा।
तेहिं जड़ वरू बाउर कस किन्हा।।

छंद कस कीन्ह वरू बौराह बिधि जेहिं तुम्हहि सुंदरता दई।
जो फलु चहिअ सुरतरूहिं सो बरबस बबुरहिं लागई।।
तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक जरौं जलनिधि महुँ परौं।
धरू जाउ उपजसु होउ जग जीवत बिवाहु न हौं करौं।।

दोहा भई बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि।
करि बिलापु रोदति बदति सुता सनेहु संभारि।।

चौपाई नारद कर मैं काह बिगारा।
भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा।।

अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा।
बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा।।
साचेहुं उन्हकें मोह न माया।
उदासीन धनु धामु न जाया।।
पर घर घालक लाज न भीरा।
बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा।।
जननिहि बिकल बिलोकि भवानी।
बोली जुत बिबेक मृदु बानी।।
अस बिचारि सोचहि मति माता।
सो न टरइ जो रचइ बिधाता।।

करम लिखा जौं बाउर नाहू।
तौ कत दोसु लगाइअ काहू।।
तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका।
मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका।।

छन्द जनि लेहु मातु कलंकु करूना परिहरहु अवसर नहीं।
दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाब जहं पाउब वहीं।।
सुनि उमा बचन विनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहु भांति विधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं।।

दोहा तेहि अवसर नारद सहित अरू रिषि सप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिन गिरि गवने तुरत निकेत।।

चौपाई तब नारद सबही समुझावा।
पूरूब कथा प्रसंगु सुनावा।
मयना सत्य सुनहु मम बानी।
जगदंबा तव सुता भवानी।।
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि।
सदा संभु अरधंग निवासिनि।।
जग संभव पालन लय कारिनि।
निज इच्छा लीला बपु धारिनि।।
जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई।
नामु सती सुंदर तनु पाई।।
तहहुँ सती संकरहि बिबाहीं।

कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं।।
एक बार आवत सिव संगा।
देखेउ रघुकुल कमल पतंगा।।
भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा।
भ्रम बस बेषु सीय कर लीन्हा।।

छन्द सिय बेषु सती जो कीन्ह तेहिं अपराध संकर परिहरीं।
हर बिरहं जाई बहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं।।
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारून तपु किया।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकर प्रिया।।

दोहा सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा विषाद।
छन महुं व्यापेउ सकल पुर घर घर यह संवाद।।

चौपाई तब मयना हिमवंतु अनंदे।
पुनि पुनि पारबती पद बंदे।।
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने।
नगर लोग सब अति हरषाने।।
लगे होनपुर मंगल गाना।
सजे सबहिं हाटक घट नाना।।
भांति अनेक भई जेवनारा।
सूप सास्त्र जस कछु व्यवहारा।।
सो जेवनार कि जाइ बखानी।
बसहिं भवन जेहिं मातु भवानी।।
सादर बोले सकल बराती।

बिष्णु बिरंचि देव सब जाती।।
बिबिधि पांति बैठी जेवनारा।
लागे परूसन निपुन सुआरा।।
नारिबृंद सुर जेवंत जानी।
लगीं देन गारीं मृदु बानी।।

छन्द गारी मधुर स्वर देहिं सुंदरि बिंग्य बचन सुनावहीं।
भोजनु करहिं सुर अति बिलंबु बिनोदु सुनि सचु पावहीं।।
जेवंत जो बढ़्यो अनंदु सो मुख कोटिहूं न परै कहयो।
अचवांइ दीन्हें पान गवने बास जहं जाको रहयो।।

दोहा बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहुं लगन सुनाई आइ।
समय बिलोकि बिबाह कर पठए देव बोलाइ।।

चौपाई बोलि सकल सुर सादर लीन्हे।
सबहि जथोचित आसन दीन्हे।।
बेदी बेद बिधान संवारी।
सुभग सुमंगल गावहिं नारी।।
सिंघासनु अति दिव्य सुहावा।
जाइ न बरनि बिरंचि बनावा।।
बैठे सिव बिप्रन्ह सिरू नाई।
हृदयं सुमिरि निज प्रभु रघुराई।।
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाईं।
करि सिंगारू सखीं लै आईं।
देखत रूपु सकल सुर मोहे।

बरनै छबि अस जग कबि को है।।
जगदंबिका जानि भव भामा।
सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा।।
सुंदरता मरजाद भवानी।
जाइ न कोटिहुं बदन बखानी।।

छंद कोटिहुं बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा।।
छबिखानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकहिं न सकुच पति पदकमल मनु मधुकरू तहाँ।।

दोहा मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जियं जानि।।

चौपाई जसि बिबाह कै बिधि श्रुतिगाई।
महामुनिन्ह सो सब करवाई।।
गहि गिरीस कुस कन्या पानी।
भवहि समरपीं जानि भवानी।।
पानिग्रहन जब किन्ह महेसा।
हियँ हरषे तब सकल सुरेसा।।
बेदमंत्र मुनिबर उच्चरहीं।
जय जय जय संकरसुर करहीं।।
बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना।
सुमन बृष्टि नभ भै बिधि नाना।।

हर गिरिजा कर भयउ बिबाहू।
सकल भुवन भरि रहा उछाहू।।
दासीं दास तुरग रथ नागा।
धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा।।
अन्न कनक भाजन भरि जाना।
दाइज दीन्ह न जाइ बखाना।।

छंद दाइज दियो बहु भांति पुनिकर जोरि हिमभूधर कहयो।
का देउं पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रहयो।।
सिव कृपा सागर ससुरकर संतोषु सब भांतिहिं कियो।
पुनि गहे पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरन हियो।।

दोहा नाथ उमा मम प्रान सम गृह किंकरी करेहु।
छमेहु सकल अपराध अब होई प्रसन्न बरूदेहु।।

चौपाई बहु बिधि संभु सासु समुझाई।
गवनी भवन चरन सिरू नाई।।
जननीं उमा बोलि तब लीन्हीं।
लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही।।
करेहु सदा संकर पद पूजा।
नारिधरमु पति देउ न दूजा।।
बचन कहत भरे लोचन बारी।
बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी।।
कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं।

पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं।।
भै अति प्रेम बिकल महतारी।
धीरजु कीन्ह कुसमय बिचारी।।
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना।
परम प्रेमु कछु जाइ न बरना।।
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी।
जाइ जननि उर पुनि लपटानी।।

छन्द जननिहि बहुरि मिलि चली उचित असीत सब काहूँ दई।
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन सब सखीं लै सिव पहिं गईं।।
जाचक सकल संतोषित संकरु उमा सहित भवन चले।

सब अमर हरषे सुमन बरषित निसान नभ बाजे भले।

दोहा चले संग हिमवंतु तब पहुँचावन अति हेतु।
बिबिध भाँति परितोषु करि बिना कीन्ह बृषकेतु।।
तुरत भवन आए गिरिराई।
सकल सैल सरलिए बोलाई।।
आदर दान बिनय बहुमाना।
सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना।।
जबहिं संभु कैलासहिं आए।
सुर सब निज निज लोक सिधाए।।
जगत मातु पितु संभु भवानी।

तेहिं सिंगारू न कहउँ बखानी।।
करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा।
गनन्ह समेत बसहिं कैलासा।।
हर गिरिजा बिहार नित नयऊ।
एहि बिधि बिपुल काल चलि गयऊ।।
तब जनमेउ षटबदन कुमारा।
तारकु असुरू समर जेंहि मारा।।
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना।
षन्मुख जन्मु सकल जग जाना।।

छंद जगु जान षन्मुख जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुषारथु महा।
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुत कर चरित संछेपहिं कहा।।

यह उमा संभु बिबाहु जो नर नारि कहहिं जे गावहीं।
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्वदा सुखु पावहीं।।

दोहा चरित सिंधु गिरिजा रमन बेद न पावहिं पारू।
बरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवांरू।।

तत्पश्चात प्रत्येक सोमवार को शिव मंदिर में जाकर शिव लिंग की पूजा करें। अन्त में कपूर की आरती करें।

यह क्रिया केवल सोमवार को ही करनी है तथा ग्यारह सोमवार तक नियमित रूप से करनी है। शिव प्रसाद से अत्यन्त सुन्दर एवं उपयुक्त वर से कन्या का विवाह सम्पन्न हो जाएगा।

विशेष :-

1. अशुद्धि की अवस्था में कन्या किसी अन्य से शिव पूजन तथा गणेश पूजन कराये किन्तु पाठ स्वयं सुने।
2. पूजा समाप्ति के बाद ही कुछ खायें पीयें।
3. सोमवार के दिन शाम को केवल एक बार नमक रहित भोजन करना है विशेषकर खीर भोजन उपयुक्त होगा।
4. पूजा विवाह होने तक नियमित तथा बिना क्रम टूटे (नागा नहीं) होनी चाहिए।
5. विवाह होने तक एक यन्त्र धारण करना होगा जिसे विवाह के पश्चात बहती हुई नदी या कुआँ में डाल दिया जाएगा।

पुस्तक एवं यंत्र **'ज्योतिष योग - वास्तु विज्ञान शोध संस्थान'** खाजपुरा अशोकपुरी रोड (दीप गंगा गैस गोदाम के सामने) से प्राप्त किया जा सकता है।